

भविष्य की राह

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन- 2026 में 'नई दिल्ली घोषणापत्र' को अपनाया जाना इस समूह की बदलती भूमिका का महत्वपूर्ण संकेत है। भारत की अध्यक्षता में हुए इस सम्मेलन की प्रष्टभूमि में पश्चिम एशिया का संघर्ष, रूस-यूक्रेन युद्ध, व्यापारिक तनाव, शुल्क नीति और वैश्विक संस्थाओं में सुधार की मांग जैसे मुद्दे प्रमुख रहे। घोषणापत्र का सबसे अहम पहलू बहुपक्षीय और अधिक व्यापक विश्व व्यवस्था तथा वैश्विक संस्थाओं में सुधार की आवश्यकता पर जोर देना है। इसे भारत के प्रयासों को सामूहिक रूप से आगे बढ़ाने की नजर से देखा जा रहा है। दरअसल, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक जैसी संस्थाओं में विकासशील देशों की भागीदारी एवं प्रतिनिधित्व बढ़ाने की मांग लंबे समय से भारत की प्राथमिकता रही है। इसका मतलब है कि विश्व स्तर के निर्णय केवल कुछ शक्तिशाली देशों तक सीमित न रहें, बल्कि वैश्विक दक्षिण की आवाज भी प्रभावी ढंग से सुनी जाए। ब्रिक्स के सभी सदस्य देशों की संयुक्त घोषणापत्र पर सहमति बनाने में सफलता की भी भारत के लिए एक कुटनीतिक जीत के रूप में देखा जा रहा है।

घोषणापत्र में आतंकवाद के खिलाफ स्पष्ट रूख भी भारत के लिए एक बड़ी उपलब्धि माना जा सकता है। इसमें आतंकवाद के सभी रूपों की निंदा करते हुए उसके विरोधपूर्ण, सीमा पर से घुसपैठ और आतंकियों को सुरक्षित पनाह देने की समस्या से निपटने की प्रतिबद्धता दोहराई गई है। घोषणापत्र में महत्वपूर्ण आतंकी हमलों की कड़ी निंदा की गई है। भारत के लिए यह इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह लंबे समय से आतंकवाद को वैश्विक चुनौती के रूप में उठाता रहा है। हालांकि घोषणापत्र की वास्तविक सफलता इससे तय होगी कि सदस्य देश आतंकवाद के खिलाफ साझा नीति को व्यवहार में कितना उतारते हैं। ब्रिक्स देशों ने अमेरिका की एकतरफा शुल्क नीति पर भी गहरी चिंता जताई और गैर-शुल्क व्यापारिक उपग्रहों की वकालत की। यूनानी मुद्रा में व्यापार, सीमा-पार भ्रूणता और वित्तीय सहयोग को बढ़ावा देना भी इसी का हिस्सा है। वर्तमान वैश्विक व्यापार में बढ़ते संरक्षणवाद के बीच यह संदेश महत्वपूर्ण है।

तकनीकी, कृषिगत बुद्धिमान, डिजिटल लचीले और सतत विकास भी भारत के एजेंडे में प्रमुखता से शामिल हैं। इसके मद्देनजर भारत ने लचीलेपन, नवाचार, सहयोग एवं स्थिरता पर जोर दिया है और इसे ब्रिक्स देशों के घोषणापत्र में भी जगह दी गई है। स्पष्ट है कि ब्रिक्स अब स्वास्थ्य, डिजिटल तकनीकी, ऊर्जा, पर्यावरण और मानव विकास जैसे क्षेत्रों में भी सहयोग बढ़ाने की दिशा में कदम बढ़ा रहा है। पश्चिम एशिया के संघर्ष पर घोषणापत्र में संयम, संवाद और कुटनीतिक का आह्वान एकजुटता को दर्शाता है। ईरान और संयुक्त अरब अमीरात जैसे अलग-अलग हिस्सों वाले देशों की मौजूदगी के बावजूद साझा दृष्टिकोण पर सहमति बनना दुनिया के लिए एक सार्थक संदेश है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को शिखर सम्मेलन में भारत की प्राथमिकता को स्पष्ट रूप से रेखांकित किया। उनका यह आह्वान वैश्विक दक्षिण को 'नियमों का पालन करने वाले' के बजाय 'नियम तय करने वाले' बनना होगा, दरअसल पश्चिम के उन देशों के लिए संदेश है, जिनकी वैश्विक निर्णयों में भागीदारी ज्यादा रहती है। बहरहाल, यदि ब्रिक्स साझा घोषणापत्र को व्यावहारिक रूप देता है, तो आने वाले वर्षों में वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था में उसकी भूमिका कहीं अधिक प्रभावशाली हो सकती है।

दाग पर पर्दा

देश की राजनीति को आपराधिक छवि के नेताओं से मुक्त करने के लिए दाग पर पर्दा करने में कोई कमी नहीं होती है। राजनीति के अपराधीकरण या संसार और विधानसभाओं में आपराधिक प्रष्टभूमि के लोगों के बढ़ते दखल पर चिंता जाहिर करने के मामले में देश की सभी पार्टियां एकजुट रहती हैं। मगर जब गंभीर अपराधों के आरोप या मुकदमों डोल रहे लोगों को उम्मीदवार न बनाने का सवाल आता है, तब शायद ही किसी पार्टी को इस तर्का का खाली रखना जरूरी लगता है। यह बेवकूफ नहीं है कि पिछले कई दशकों से चुनौती राजनीति में ऐसे लोग भी आम होते गए हैं, जिन पर छोटे-बड़े से लेकर बड़े अपराधों तक में शामिल रहने का आरोप होता है। हैरानी की बात यह भी है कि जब कोई दानी प्रष्टभूमि का व्यक्ति चुन कर जनप्रतिनिधि बन जाता है, तो उसे टिकट देने वाली पार्टी यह बताती भी जरूरी नहीं समझती कि उसके सामने ऐसी क्या मजबूरी या वजह थी कि जानते-बूझते हुए भी उसने आपराधिक छवि के किसी व्यक्ति को उम्मीदवार बनाने लाफल समझा।

राजनीतिक दलों के इस रूख पर अक्सर सवाल उठते रहे हैं। गौरवलाय है कि इस साल की चुनौती में हुए पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में दानी प्रष्टभूमि के लोगों को उम्मीदवार बनाने के कारणों को सार्वजनिक करने में सभी दल विफल रहे। एसोसिएशन पर डेमोस्ट्रिक रिपोर्ट (एडीआर) ने इथान्पन राजनीतिक दलों की ओर से दखिल किए गए दस्तावेजों के आधार पर तैयार अपनी रिपोर्ट में बताया कि 1,405 उम्मीदवारों में से 191 के बारे में जरूरी जानकारी नहीं दी गई। जबकि नियमों के मुताबिक मयदाताओं को उम्मीदवारों की आपराधिक प्रष्टभूमि के बारे में बताने के साथ-साथ यह भी बताना जरूरी है कि किसी राजनीतिक दल ने एक रणनीति को इस उद्देश्य के लिए बनाया और इसके लिए किसी वेदांग छवि वाले व्यक्ति को क्यों नहीं चुना। जाहिर है, ऐसा करने पर पार्टीयों के सामने एक नैतिक बाधा खड़ी हो जाएगी कि उनके राजनीति में अपराधीकरण को बढ़ावा देने के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। मगर लाभार्थी सभी राजनीतिक दलों का इस तरह का रूख ही क्या इसके लिए जिम्मेदार नहीं है कि आज नागरिकों के सामने ईमानदारी और वेदांग जनप्रतिनिधि चुनने के विकल्प सिमटते जा रहे हैं?

वैश्विक भागीदारी बढ़ाने का संकल्प



ब्रह्मदीप अलुने

देश की राजधानी दिल्ली में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन ऐसे समय में हुआ है, जब विश्व की राजनीति और अर्थव्यवस्था बहुपक्षीय दिशा में आगे बढ़ने की कोशिश कर रही है। रूस-यूक्रेन युद्ध, पश्चिम एशिया का संघर्ष और व्यापारिक तनाव ने अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के सामने नई चुनौतियां खड़ी की हैं। ऐसे में ब्रिक्स केवल आर्थिक सहयोग के मंच के रूप में ही नहीं, बल्कि वैश्विक शक्ति-संतुलन स्थापित करने में भी बड़ी भूमिका निभा सकता है। इसमें दोराय नहीं कि सहयोग और स्थिरता का निर्माण विभिन्न देशों के बीच संवाद, विश्वास एवं साझेदारी को मजबूत करता है। आज वैश्विक चुनाव, आर्थिक प्रतिस्पर्धा, तकनीकी परिवर्तन, जलवायु संकट और सुरक्षा चुनौतियां के बीच विश्व शांति, संतुलित विकास और प्रभावी अंतरराष्ट्रीय सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है। ब्रिक्स सम्मेलन में आम सहमति से जारी घोषणापत्र में यह बात स्पष्ट नजर आई की उपरती अर्थव्यवस्थाओं को बदलती वैश्विक व्यवस्था में अधिक प्रभावी भूमिका देने की जरूरत है।

ब्रिक्स देश आर्थिक, तकनीकी और कुटनीतिक सहयोग बढ़ाकर वैश्विक संस्थाओं में सुधार की मांग को प्रभावी तरीके से आगे बढ़ा सकते हैं। हालांकि, सदस्य देशों के राष्ट्रीय हित, राजनीतिक मतभेद और आर्थिक असमानताएं भी एक चुनौती हैं, मगर साझा सहमति से यह समूह विश्व व्यवस्था को बहुपक्षीय, प्रतिनिधिमूलक और संतुलित बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। इसके संकेत ब्रिक्स के 'नई दिल्ली घोषणापत्र' में नजर आते हैं, जिसमें वैश्विक शांति, संघर्षों का कुटनीतिक समाधान, आतंकवाद के विरुद्ध सहयोग, बाधा रहित व्यापार, ऊर्जा सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन, तकनीकी एवं डिजिटल सहयोग और वैश्विक संस्थाओं में सुधार जैसे विश्व शांतिवादी किए गए हैं। इस घोषणापत्र को ब्रिक्स और भारत की सफलता के रूप में देखा जा सकता है, क्योंकि सदस्य देशों ने मतभेदों के बीच साझा सहमति कायम की और वैश्विक शांति, बहुपक्षवाद, आर्थिक सहयोग, विकास तथा वैश्विक संस्थाओं में सुधार जैसे मुद्दों पर सामूहिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

भारत के सामने भी अब इन कुटनीतिक अवसरों को उभार परिणामों में बदलने की चुनौती है। रूस, चीन, ईरान और वैश्विक दक्षिण के देशों के साथ बात संवाद को आर्थिक, रणनीतिक एवं तकनीकी सहयोग से आगे बढ़ाना भारत के हित में होगा। बदलते वैश्विक परिदृश्य में रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजकिशनन की भारत यात्रा महज एक शिखर सम्मेलन में भागीदारी नहीं थी। यह ऐसे समय में हुआ, जब दुनिया शक्ति-संघर्ष, युद्ध, आर्थिक प्रतिस्पर्धा और पश्चिम एशिया में तनाव के दौर से गुजर रही है। ऐसे में रूस, चीन, ईरान और वैश्विक दक्षिण के प्रमुख प्रतिनिधियों का भारत आकर एकजुटता दिखाना नई दिल्ली की कुटनीतिक क्षमता और बढ़ती स्वीकारता का महत्वपूर्ण संकेत है। यह अमेरिका और उसके सहयोगियों के लिए भी संदेश है कि वैश्विक राजनीति में संयुक्त के नए कदम उभर रहे हैं। ब्रिक्स सम्मेलन के अवसर पर पुतिन की उपस्थिति रूस-भारत संबंधों की निरंतरता का प्रतीक बनी है। शी जिनपिंग की



मौजूदगी भारत-चीन संवाद की आवश्यकता को रेखांकित करती है, जबकि पेजकिशनन की भागीदारी पश्चिम एशिया, ऊर्जा और संर्षक भागी के संदर्भ में भारत की भूमिका के महत्व को दर्शाती है। ब्रिक्स सम्मेलन में ईरान की उपस्थिति भागीदारी अपने आप में दुनिया के लिए एक बड़ा कुटनीतिक संदेश है। इससे

ब्रिक्स की आर्थिक क्षमता, विशाल जनसंख्या, प्राकृतिक संसाधन और वैश्विक दक्षिण में बढ़ती स्वीकार्यता इसकी ताकत है। मगर उसके समक्ष चुनौतियां भी कम नहीं हैं। हालांकि, ब्रिक्स देशों के बीच स्थानीय मुद्राओं में व्यापार और टैरिफिक प्रतीति व्यवस्था की दिशा में प्रयास जारी है, मगर डालर आधारित व्यवस्था का मजबूत विकल्प अभी तक सामने नहीं आया है। ब्रिक्स का प्रभाव आर्थिक और कुटनीतिक क्षेत्र में तो दिखाई देता है, लेकिन सामूहिक राजनीतिक शक्ति के रूप में उसकी भूमिका अभी विकासशील अवस्था में है। फिर भी वैश्विक संस्थाओं में सुराग, व्यापार, जलवायु, स्वास्थ्य और तकनीकी सहयोग जैसे मसलों पर ब्रिक्स अपनी भूमिका बढ़ाने का प्रयास कर रहा है।

अमेरिका की भी यह आभास हुआ है कि ईरान अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अलग-थलग नहीं है और उपरती शक्तियों के साथ उसके संबंध महत्वपूर्ण बने हुए हैं।

करुणा का जीवन

अखिलेश श्रीवास्तव चमन

एक स्वस्थ, समरस, सौखिन्य तथा उन्नत मानवीय मूल्यों से संरचन करने के लिए उसके नागरिकों में करुणा का होना अनिवार्य है। करुणा विहीन समाज क्लेश रहित हो ही नहीं सकता। जो समाज जिज्ञान ही अधिक करुणा प्रधान होगा, वह उन्ना ही अधिक मानवीय और विकासशील होगा। दरअसल, करुणा एक व्यक्तिगत गुण है। यह मानव मन की आदित को व्यापकता देता है। उसके व्यक्तित्व को निष्काम उदार और उदात्त बनाता है। चूंकि समाज व्यक्तियों का समूह होता है, इसलिए उदात्त चरित्र वाले व्यक्तियों का समाज अपने आप ही उदात्त मानवीय मूल्यों से युक्त हो जाता है। उदात्त मानवीय मूल्य का अग्रिप्राय है- पर-पीड़ा को आसरात करुण।

हिंदुत्वना यह है कि हम जैसे-जैसे प्रगति करते गए, हमारे अंदर मानवीय मूल्यों का क्षय होता गया। आज के औद्योगिकवादी समय में, जबकि सामाजिक जीवन के सारे संबंध और कार्य-व्यापार अपने-अपने के चुके हैं, मानवीय मूल्यों की बात करना हास्यास्पद लगता है, यह स्वाभाविकता के उल्का और मानवीय मूल्यों के घोर पतन का समय है। मानवीय मूल्य मनुष्य की सोच का विस्तार करते हैं, उसे व्यष्टि से समष्टि की ओर ले जाते हैं और उसके अंदर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना जागृत करते हैं। मगर आज आधुनिक की सोच सीमित, संकुचित और आत्मकेंद्रित होती जा रही है। यह व्यष्टि के आगे सोच ही नहीं पाता। मानव चित्त के इस विकार का प्रमुख कारण है, उसके अंदर करुणा की भावना का ह्रास।

करुणा दूसरे के दुःख से दुखी होने की भावना है। कोई आवश्यकता है कि वह दुःख हमारा समा-बंधी या परिचित ही हो। करुणा की भावना किसी भी प्राणि-मात्र के प्रति हो सकती है। मानव मन से जुड़ी बड़ी-छोटी अन्य भावनाएं-यथा दया, माया, प्रेम, ममता, अहिंगा, सम्मान, सहस्रभूमि आदि भी हैं, जिन्हें करुणा के समकक्ष समझा जाते हैं, लेकिन वास्तव में ऐसा है नहीं। करुणा की भावना उपर्युक्त सभी के मुकाबले अधिक प्राचीन और सघन होती है। बाकी सभी भावनाओं का संबंध बुद्धि से होता है, जबकि करुणा का संबंध धर्म से। अन्य सारे भाव वांछित हो सकते हैं, लेकिन करुणा स्वतःस्फूर्त होती है। अन्य भाव पात्र संप्रति होते हैं, जबकि करुणा सार्वत्र प्रणियों के प्रति प्रकट। करुणा का प्रभाव असीम है। करुणा मानव की मूल प्रवृत्ति है, मगर के रचना का अभिन्न है। बाकी भाव उस तम रास्य के साथ क्रमशः विकसित होते हैं, लेकिन करुणा जन्मजात होती है। एक अविद्य बच्चा करुणा से भरा होता है। वह अपनी मां को दुखी देख कर दुखी हो जाता है। भाई-बहनों को रोते देख कर रोने लगता है। यहां तक कि पशु-पक्षियों तक

दुनिया मेरे आगे

करुणा जहां हमारे चित्त की आत, संतुष्ट और धीरे बढाती है, वहीं घृणा तथा क्रोध हमें अज्ञात असंतुष्ट और उदा बनाते हैं। करुणा हमें दूसरों के साथ जोड़ने का काम करती है, वहीं घृणा और क्रोध अलगवने का। करुणा निर्माण और विकास का मूल प्रसार करती है, वहीं घृणा और क्रोध ध्वंस पर निर्माण का। करुणा हमें उदार बनाती है, घृणा और क्रोध संकुचित और स्वार्थी।

दुहित समाज में विकसित हो रहे बच्चों के अंदर करुणा और मानवीय मूल्यों के बीज अंकुरित ही नहीं हो पाते हैं।

करुणा मानवीय मूल्यों और प्रक्रांरों के एक स्वस्थ समुन्नत समाज का मूल आधार है। यही कारण है कि सभी महात्माओं ने मानव मात्र के अंदर करुणा के रक्षण का संदेश दिया है। दरअसल, करुणा का भाव ममता, दयालुता, सौखिन्य, सहस्रता, सहस्रभूमि और प्रेम की बातें आज पहिचान का विश्व पर असीम है। इण्डियन समरत कोमल भलानाओं की जनपदाती है। करुणा से युक्त मनुष्य किसी भी दम में अनेकिक, अस्वाम्यधिक और आतंती नहीं हो सकता है। करुणा मनुष्य के अंदर आत्म-पतित की जागृत करती है और इस प्रकार उसे निर्दोष होने तथा गलत मार्ग पर जाने से रोकती है। पतियां कभी फूल बनने की पड़ती नहीं करती।

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

मुनाफे की होड़

दिल्ली के सत्य निकेतन में बार्गेमैजिन इमारत का इतना विप्रे एक हादसा नहीं। अखिर क्या बकह है कि जरूर भवनों की पटवन्तों पर उनकी निगरानी करने में व्यवस्था नाकाम साबित हो रही है। जब इमारत पहल से जरूर थी, तो सख्त और निम्नलि करने की अनुमति मिलती थी और यदि अनुमति नहीं थी, तो निर्माण को रोकने वाला तंत्र कार्य था? बरसल के दिनों में कमजोर इमारत के भूतल में खुदाई या निर्माण कितना बड़ा जोखिम पैदा कर सकता है, यह समझने के लिए किसी विशेषज्ञ की जरूरत नहीं है। फिर भी जिम्मेदार महकमे शासन हादसे का इंतजार करते रहें। जरूर भवनों को खड़े रहने दें और उनमें नियम विरुद्ध निर्माण होने देने के लिए केवल पत्र मालिकों को दौरी ठहराना जरूरी नहीं होगा। भवन मालिक अधिक से अधिक मनुष्य कमाना चाहते हैं, जबकि व्यवस्था का काम यह सुनिश्चित करना है कि मुनाफे की यह होड़ किसी की जिंदगी पर भारी न पड़े। मगर जब नियमों की निगरानी करने वाली हो आंखें बंद होती हैं और अवैध निर्माणों को सतत रहने रोकेने के बजाय हादसे के बाद जांच वैदाई जाए, तब कानून कितानों में ही रह जाता है।



- विप्रति युवक्या, दिल्ली

स्वच्छता के मायने

‘प्रदूषण की पराह' (संपादकीय, 10 सितंबर) पृष्ठा। स्वच्छ जल एक सौखिन्य है। 2026 के पहिलाम एक ओर उल्लास जागते हैं, तो दूसरी ओर हमारी बाहु-प्रयत्न व्यवस्था की गंभीर तस्वीर भी सामने रहते हैं। एक ही तीर शहरी के मूल्यवर्धन में प्रदूषण के प्रमुख स्त्रोत पर नियंत्रण, शहरी की स्वच्छ जल कार्ययोजना का क्रियान्वयन तथा शहरी के प्रयासों को आधार बनाया जाए। अंशम बात यह है कि स्वच्छ जल केवल स्वच्छता का विषय नहीं, नागरिकों के

उपेक्षा का दंश

‘बुजुगों की सुग' (संपादकीय, 9 सितंबर) पृष्ठ। पहले संयुक्त परिवारों में बुजुगी के दंडन का कोई सदस्य मित-जुल कर उल्लास जागते हैं, तो दूसरी ओर हमारी बाहु-प्रयत्न व्यवस्था की गंभीर तस्वीर भी सामने रहते हैं। एक ही तीर शहरी के मूल्यवर्धन में प्रदूषण के प्रमुख स्त्रोत पर नियंत्रण, शहरी की स्वच्छ जल कार्ययोजना का क्रियान्वयन तथा शहरी के प्रयासों को आधार बनाया जाए। अंशम बात यह है कि स्वच्छ जल केवल स्वच्छता का विषय नहीं, नागरिकों के

हरित राजमार्ग

देश पर राजधानी के निजाने राह हरियाली दिखो। ये सड़कें केवल आवागमन का हिस्सा नहीं, बल्कि स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण का आधार बन सकती हैं। भारतीय प्रत्यक्ष राजधानी प्राधिकरण की 'आवेश रंग' पहल महत्वपूर्ण है। इससे राजधानी को हरित पट्टीयों में बदलने की संभावनाएं खुलती हैं। नीम, आंवला, आम, इमली, तुलसी और अमरनाथ जैसे औषधीय पौधों का रोपण सड़कों की सुरक्षा बढ़ाने के साथ आधुनिक नगरी और स्वास्थ्य-जागरूकता को बढ़ाएगा। हरित पट्टियां धूल और ताम्रामन कम करने, कार्बन सोखने, मिट्टी बांधने तथा पक्षियों-निलियों को आश्रय देने में सहायक होंगी। औषधीय खेती किसानों के लिए अतिरिक्त आय का माध्यम बन सकती है, जबकि विद्यार्थियों को संरक्षण गतिविधियों से जोड़ कर जंगल-भागीदारी का स्वरूप दिया जा सकता है।

- आरके जैन 'अजीब', बदायनी

 सुजीत कुमार, टिप्पणीकार

